© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 09 | October – December 2017

लोकप्रिय हिंदी सिनेमा में दलित चित्रण

मनोज कुमार, पीएच.डी शोधार्थी. पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक।

सार संक्षेप : हिंदी फिल्मों के पितामह दादा साहब फाल्के ने जब पहली फिल्म बनाई थी तब उन्होंने पौराणिक कथानकों को उठाया था। आरंभिक फिल्में कही न कही पारसी के लोकप्रिय थियेटर की ही जगह ले रहे थे। पारसी थियेटर के नाटक अधिक रूप में उस मेलाड्रामा का ही एक मंचीय रूप था जिसे हम वर्तमान के लोकप्रिय सिनेमा से जोडते है। इसके साथ यह भी सही है कि इन मनोंरजन फिल्मों के निर्माण में कुछ उद्देश्य को ध्यान में रखा जाने लगा था हमें यही पूरे इतिहास को जानने की आवश्यकता नहीं है लेकिन आरंभ से वर्तमान तक इन्ही मेलोड्रामाई फिल्म विधा में लगातार ऐसी फिल्में बनती रही जिनमें नए प्रयोग भी होते रहे और जिनमें किसी न किसी सामाजिक समस्या को अधिक गंभीरता से उठाया जाता रहा। दलित वर्ग का अर्थ अस्पृश्य ही नहीं अपितु सामाजिक रूप से अविकसित, पीड़ित, शोषित, निम्न, जातियों के वर्गों की गणना भी दलित में होती है। प्रस्तुत पेपर में शोधार्थी ने लोकप्रिय हिंदी सिनेमा में दलित चित्रण को विभिन्न रूपों में दिखाया गया है।

मुख्य शब्द : सिनेमा, लोकप्रिय, दलित, दर्शक, व्यवसाय, कलाकार, कहानी, शोषण, स्वरूप

लोकप्रिय हिंदी सिनेमा से अभिप्राय

लोक' शब्द की प्राचीनता : लोक 'शब्द' संस्कृत के 'लोक दर्शन' धातु से 'घ प्रत्यय करने पर निशपन्न हुआ है। इस धातु का अर्थ 'देखना' होता है, जिसका लट् लकार में अन्य पुरूष एक वचन का रूप 'लोकते' है। अतः लोक 'शब्द' का अर्थ हुआ 'देखने वाला'। अत वह समस्त जन–समुदाय जो इस कार्य को करता है 'लोक' कहलाएगा। लोक शब्द अत्यत प्राचीन है। साधारण जनता के अर्थ में इसका प्रयोग 'ऋग्वेद' में अनेक स्थानों पर किया गया है। ऋग्वेद में लोक शब्द के लिए 'जन' का भी प्रयोग उपलब्ध है। ऋग्वेद के पुरूष सूक्त में लोक शब्द का व्यवहार 'जीव' तथा 'स्थान' दोनों अर्थों में किया गया है। उपनिषदों में अनेक स्थानों पर लोक' शब्द व्यवहार में लाया गया है। दादा साहब फाल्के ने जब पहली फिल्म बनाई थी तब उन्होंने पौराणिक कथानकों को उठाया था। आरंभिक फिल्में कही न कही पारसी के लोकप्रिय थियेटर की ही जगह ले रहे थे। पारसी थियेटर के नाटक अधिक रूप में उस मेलाड्रामा का ही एक मंचीय रूप था जिसे हम वर्तमान के लोकप्रिय सिनेमा से जोडते है। इसके साथ यह भी सही है कि इन मनोंरजन फिल्मों के निर्माण में कुछ उद्देश्य को ध्यान में रखा जाने लगा था हमें यही पूरे इतिहास को जानने की आवश्यकता नहीं है लेकिन आरंभ से वर्तमान तक इन्ही मेलोड्रामाई फिल्म विधा में लगातार ऐसी फिल्में बनती रही जिनमें नए प्रयोग भी होते रहे और जिनमें किसी न किसी सामाजिक समस्या को अधिक गंभीरता से उठाया जाता रहा। इसी दौर में अगर हम बात करे महबूब की फिल्म 'मदर इंडिया' की जो पूरी गंभीरता से गांव में महाजनी शोषण पर आधारित थी। फिल्म के फिल्मांकन ने इस तरह के गंभीर मसले को उठाते हुए लोकप्रिय सिनेमा के उन सभी नुस्खों का बखूबी इस्तेमाल करती नजर आई जो बाद में अन्य फिल्मों के निर्माण में भी दर्शकों को देखने को मिला। 1943 में बनी फिल्म 'किस्मत' अपने समय की सर्वाधिक लोकप्रिय फिल्म थी। इस फिल्म में खोए हुए बेटे की कहानी को पहली बार कथा का आधार बनाया था और यह फार्मूला आज भी लोकप्रिय है। लेकिन अगर हम देखे तो फिल्म 'किस्मत' आज उतनी लोकप्रिय नहीं है जितने की अपने जमाने में थी। ऐसी काफी फिल्में है जो अपने समय में लोकप्रिय हुई और उन्होंने अच्छा व्यवसाय किया लेकिन बाद के दौर में उन्हें वक्त के साथ दर्शकों ने भूला दिया गया। लेकिन कुछ ऐसी लोकप्रिय फिल्में भी है, जो अपने समय में भी लोकप्रिय हुई ओर आज भी लोग उन्हें देखना पंसद करते है। मसलन 'मुगले आजम', 'मदर इंडिया, ' 'शोले' जैसी फिल्मों का नाम लिया जा सकता है। यह ऐसी फिल्में है जिन्हें प्रदर्शन के समय उतनी कामयाबी नहीं मिली लेकिन बाद में ये लगातार देखी जाती रही ओर उन्हें अच्छी फिल्म के तौर पर लोकप्रिय फिल्में कही जाती रही है। इस संक्षिप्त विचार के बाद हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि फिल्म का लोकप्रिय होना उसकी सफलता या असफलता पर निर्भर नहीं करता। लोकप्रिय फिल्म तो वह होती है जो समाज के सभी वर्गों के लिए बनाई गई हो। इस तरह की बनी फिल्में मनोंरजन से भरपूर होती है इसके साथ यह किसी पारिवारिक समस्या पर आधारित होती है जो लोक के लिए होती है। दूसरे हम अगर कुछ लोकप्रिय फिल्में नहीं देखते तो ये कहते है कि उन लोकप्रिय हो चुकी फिल्मों के आगे से लोकप्रिय शब्द नहीं हटा सकते है। लोकप्रिय होना सब के साथ भी है और समय के बाद भी चलता रहता है।

लोकप्रिय संस्कृति : लोकप्रिय संस्कृति उन वस्तुओं, कार्यों और विशवास की ओर संकेत करती है जो एक बड़ी जनसंख्या से संगंठित हुए हैं और उनके द्वारा प्रयोग में लाए जा रहे हैं या अपनाये जा रह है। हम लोकप्रिय संस्कृति में हमारे द्वारा खाया जाने वाला खाना, पहने जाने वाले कपड़े, हमारे द्वारा बिताया गया वक्त का तरीका जैसे आपस में की जाने वाली चुगली, एक–स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का तरीका या अन्य सब शामिल करते है जो एक समुदाय द्वारा किया जाता है। बशर्ते की ये सब लोकजन में व्याप्त हो अथवा उनके द्वारा किया गया हो। इस तरह साफ है कि लोकप्रिय संस्कृति में प्रतिदिन प्रयोग की जाने वाली वस्तुएं, किए वाले कार्य व कार्यक्रम और बहुत कुछ दैनिक जीवन का हिस्सा है सब इसके तत्व है। लोकप्रिय संस्कृति के ये तत्व उस वक्त ही इसका हिस्सा बन पाते हैं जब लोग इसमें एक से अधिक रूचि रखना या करना आरंभ शुरू करते है और दैनिक संस्कृति में इसे अपना लेते है। जब लोग इन औद्योगिक संस्कृति उत्पादों को दैनिक जीवन में उपभोग कर इन दोनों में अर्न्तसंबंध स्थापित कर देते है, उस वक्त इन